सूरह — एक कहानी

सूरह मरयम

मरयम

पूरा सफ़र — वो सूरह जिसने एक बादशाह को नर्म किया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 19 • 98 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इज़ नादा रब्बहू निदा-अन ख़फ़िय्या
3. जब उसने अपने रब को एक छुपी (धीमी) पुकार से पुकारा।

व लम अकुम्-बि-दु'आइक रब्बि शक़िय्या
4. और मेरे रब, मैं तुझ से दुआ माँग कर कभी महरूम नहीं हुआ।

व हुज़्ज़ी इलैकि बि-जिज़्'इन्-नख़्लति तुसाक़ित 'अलैकि रुतबन जनिय्या
25. और खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिलाओ, वो तुमपर ताज़ा पकी खजूरें गिराएगा।

क़ाल इन्नी 'अब्दुल्-लाह; आतानियल्-किताब व ज'अलनी नबिय्या
30. उसने कहा: मैं अल्लाह का बंदा हूँ; उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया।

या अबति इन्नी क़द जा-अनी मिनल्-'इल्मि मा लम यअ्तिक फ़त्तबिअ्नी
43. ऐ मेरे प्यारे अब्बा, मेरे पास वो इल्म आया है जो आपके पास नहीं आया, तो मेरी पैरवी कीजिए।

इन्नल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति स-यज्'अलु लहुमुर्-रहमानु वुद्दा
96. बेशक जो ईमान लाए और नेक अमल किए, उनके लिए अर्-रहमान मोहब्बत रख देगा।

वो सूरह जिसने एक बादशाह को रुलाया

बेटा, इस सूरह को खोलने से पहले, आपको जानना चाहिए कि इसे पहली बार खुले-आम कहाँ पढ़ा गया — क्योंकि ये आपको बताता है कि ये कैसी सूरह है।

मक्का के इब्तिदाई सालों में, जब ज़ुल्म ना-क़ाबिल-ए-बर्दाश्त हो गया, मुसलमानों का एक गिरोह हब्शा (एबिसीनिया) की तरफ़ हिजरत कर गया, ईसाई बादशाह नजाशी के पास। क़ुरैश ने तोहफ़ों के साथ क़ासिद भेजे, मुतालबा करते हुए कि उन्हें वापस सौंप दिया जाए।

बादशाह ने मुसलमानों को बुलाया और उनसे अपनी सफ़ाई माँगी। ज'अफ़र इब्न अबी तालिब (रज़ि0) खड़े हुए और बयान किया कि वो पहले क्या थे: जहालत के

लोग, बुत पूजते, मुर्दार खाते, बे-हयाई करते, रिश्ते काटते, ताक़तवर कमज़ोर को निगलते — और कैसे अल्लाह ने उन में एक ऐसा आदमी भेजा जिसे वो उसकी सच्चाई और अमानतदारी के लिए जानते थे, जिसने उन्हें सिर्फ़ अल्लाह की इबादत, सच बोलने, अमानतें रखने, रिश्ते जोड़ने, अच्छे पड़ोसी होने, और नमाज़ पढ़ने और सदक़ा देने की तरफ़ बुलाया।

और फिर बादशाह ने पूछा कि क्या उस वही में से कुछ उसके पास है। और ज'अफ़र ने **इसी सूरह** से पढ़ा — मरयम और 'ईसा (अलैहि0) के बारे में वाला हिस्सा।

रिवायात कहती हैं कि बादशाह इतना रोया कि उसकी दाढ़ी गीली हो गई, और उसके पादरी रोए, और उसने कहा कि ये और जो 'ईसा लाए एक ही सरचश्मे से है। और उसने मुसलमानों को सौंपने से इनकार कर दिया।

बेटा, इसे पढ़ते हुए याद रखिए: **ये आयतें, एक बार पढ़ी गईं, एक सताए गए गिरोह के लिए पनाह पा गईं। अल्फ़ाज़ वो कर सकते हैं जो लश्कर नहीं कर सकते।**

एक पुकार जो किसी और ने न सुनी

सूरह कुछ हर्फ़ों से खुलती है, और फिर: '**ज़िक्रु रहमति रब्बिक 'अब्दहू ज़करिय्या** — तेरे रब की **रहमत** का **ज़िक्र** उसके बंदे ज़करिया पर।'

बेटा, इस बंदी (फ़्रेमिंग) को ग़ौर कीजिए: पूरी कहानी **रहमत** के बयान के तौर पर पेश की गई है। और वो नाम ग़ौर कीजिए जो इस पूरी सूरह में एक धागे की तरह चलेगा: **अर्-रहमान**, सब से ज़्यादा रहम करने वाला।

'इज़ नादा रब्बहू निदा-अन ख़फ़िय्या — जब उसने अपने रब को एक छुपी, निजी, धीमी पुकार से पुकारा।'

बेटा, 'निदा-अन ख़फ़िय्या' — एक छुपी पुकार। **उसने अपनी ज़रूरत का एलान न किया।** उसने लोगों को न बताया कि वो क्या माँग रहा है। वो इसे चुपके से अल्लाह के पास ले गया, जहाँ कोई और न सुन सके।

और बेटा, उलमा ने इस से एक ख़ूबसूरत नुक़्ता निकाला: **सब से महबूब दुआ वो है**

जिसे कोई नहीं जानता। उस में कोई दिखावा नहीं, किसी को मुतअस्सिर करने वाला नहीं, और कोई तुमपर तरस खाने वाला नहीं। बस एक बंदा और उसका रब अंधेरे में।

'**क़ाल रब्बि इन्नी वहनल्-'अज़्मु मिन्नी** — उसने कहा: **मेरे रब, बेशक मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गईं — वश्त'अलर्-रअ्सु शैबा — और मेरा सर सफ़ेदी से भड़क उठा।**'

बेटा, क्या तस्वीर है: 'इश्त'अलर्-रअ्सु शैबा' — सर सफ़ेदी से **आग पकड़** गया, जिस तरह एक शो'ला सूखी घास में फैलता है। भूरे-सफ़ेद बालों ने पूरी तरह क़ब्ज़ा कर लिया।

और फिर वो जुमला, बेटा, जिसे मैं चाहता हूँ आप अपनी बाक़ी ज़िंदगी के लिए थामे रखें:

'**व लम अकुम्-बि-दु'आइक रब्बि शक़िय्या — और मेरे रब, मैं तुझ से दुआ माँग कर कभी महरूम (बद-बख़्त) नहीं हुआ।**'

बेटा, वो क्या कह रहा है? वो कह रहा है: **मेरी पूरी ज़िंदगी, जब भी मैंने तुझे पुकारा, मैं कभी मायूस हो कर नहीं गया। तूने मुझे कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटाया।**

और ग़ौर कीजिए वो इसे कैसे इस्तेमाल करता है: वो फ़ख़्र नहीं कर रहा। **वो एक मुक़दमा बना रहा है।** वो कह रहा है: ये मेरे साथ तेरी आदत है, मेरे रब — और मैं इस पर फिर भरोसा कर रहा हूँ।

बेटा, ये दुआ माँगने के सब से ख़ूबसूरत तरीक़ों में से एक है: **अल्लाह को — और ख़ुद को — हर उस बार की याद दिलाना जब उसने पहले तुम्हें जवाब दिया।** क्योंकि जो शख़्स अपने गुज़रे जवाबों का जायज़ा लेता है उसे अगले पर भरोसा करना कहीं आसान लगता है।

और उसने क्या माँगा? '**फ़-हब ली मिल्-लदुन्क वलिय्या** — तो **मुझे अपनी तरफ़ से एक वारिस अता कर** — **यरिसुनी व यरिसु मिन आलि यअ्क़ूब** — जो मेरा और याक़ूब के ख़ानदान का वारिस हो — **वज्'अल्हु रब्बि रज़िय्या — और उसे, मेरे रब, पसंदीदा बना (तेरे लिए)।**'

बेटा, आख़िरी दरख़्वास्त ग़ौर कीजिए। उसने महज़ एक बेटा न माँगा। उसने ऐसा माँगा जो 'रज़िय्या' हो — अल्लाह के लिए पसंदीदा। **उस वारिस का क्या फ़ायदा जो तुम्हारी दौलत का वारिस हो मगर तुम्हारे दीन का नहीं?**

'या ज़करिय्या इन्ना नुबश्शिरुक बि-ग़ुलामिनिस्-मुहू यह्या लम नज्'अल लहू मिन क़ब्लु समिय्या — ऐ ज़करिया, हम तुझे एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसका नाम यह्या होगा। हमने इस से पहले किसी को ये नाम नहीं दिया।'

बेटा, अल्लाह ने ख़ुद बच्चे का नाम रखा। और वो इशारा करते हैं कि इस से पहले किसी ने वो नाम न उठाया था।

और ज़करिया ने, हैरत से, पूछा: मेरा एक लड़का कैसे होगा जब मेरी बीवी बाँझ है और मैं इंतेहाई बुढ़ापे को पहुँच चुका? और जवाब: **'कज़ालिक क़ाल रब्बुक हुव 'अलय्य हय्यिन — यूँ तेरे रब ने कहा: ये मेरे लिए आसान है — व क़द ख़लक़्तुक मिन क़ब्लु व लम तकु शै-आ — और मैंने तुझे पहले बनाया, जब तू कुछ भी न था।'**

बेटा, उस जवाब की ताक़त महसूस कीजिए। **तू पूछ रहा है कि मैं एक बूढ़े और एक बाँझ औरत से बच्चा कैसे बनाऊँगा? मैंने तुझे बनाया जब वहाँ कुछ था ही नहीं। कौनसा ज़्यादा मुश्किल है?**

और यह्या को बचपन में ही उसकी हिदायात मिल गईं: **'या यह्या ख़ुज़िल्-किताब बि-क़ुव्वह — ऐ यह्या, किताब को मज़बूती से थाम — व अतैनाहुल्-हुक्म सबिय्या** — और हमने उसे बचपन में ही **हिकमत** दी।'

और उसका बयान: **'व हनानम्-मिल्-लदुन्ना व ज़कात** — और अपनी तरफ़ से **नर्म-दिली**, और **पाकीज़गी — व काना तक़िय्या** — और वो परहेज़गार था — **व बर्रम्-बि-वालिदैहि व लम यकुन जब्बारन 'असिय्या — और अपने माँ-बाप का फ़रमाँबरदार**, और वो न सरकश था न ना-फ़रमान।'

बेटा, ग़ौर कीजिए एक नबी की ता'रीफ़ में क्या ज़िक्र हुआ: **अपने माँ-बाप से हुस्न-ए-सुलूक।** ये इस किताब में कभी एक छोटी चीज़ नहीं।

मरयम और खजूर का दरख़्त

'**वज़्कुर फ़िल्-किताबि मरयम इज़िन्-तबज़त मिन अह्लिहा मकानन शर्क़िय्या** — और किताब में **मरयम** का **ज़िक्र** कर, जब वो अपने घरवालों से **अलग हो कर** मशरिक़ की तरफ़ एक जगह गई — **फ़त्तख़ज़त मिन दूनिहिम हिजाबा** — और उसने उन से परे एक **पर्दा** ले लिया।'

बेटा, उसकी आदत ग़ौर कीजिए: वो इबादत के लिए अलग हो गई, और उसने ख़ुद को पर्दे में ले लिया। ये एक ऐसी औरत थी जो तन्हाई में अपने रब के लिए वक़्फ़ थी।

'**फ़-अर्सल्ना इलैहा रूहना फ़-तमस्सल लहा बशरन सविय्या** — फिर हमने उसकी तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा, और उसने उसके सामने एक **मुकम्मल आदमी** की शक्ल इख़्तियार की।'

और उसका फ़ौरन रद्द-ए-अमल, बेटा, आपको उसके बारे में सब कुछ बताता है: '**क़ालत इन्नी अ'ऊज़ु बिर्-रहमानि मिन्क इन कुन्त तक़िय्या** — उसने कहा: **बेशक, मैं तुझ से अर्-रहमान की पनाह माँगती हूँ, अगर तू अल्लाह से डरने वाला है।**'

बेटा, एक अजनबी आदमी उसकी निजी इबादत-गाह में ज़ाहिर होता है, और उसका पहला हथियार चीख़ नहीं है — ये है 'अ'ऊज़ु बिर्-रहमान', मैं अर्-रहमान की पनाह माँगती हूँ। और फिर वो उस में जो भी तक़वा हो उस की तरफ़ इशारा करती है।

'**क़ाल इन्नमा अना रसूलु रब्बिकि लि-अहब लकि ग़ुलामन ज़किय्या** — उसने कहा: मैं तो बस तेरे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक **पाक लड़का** दूँ।'

उसने ए'तिराज़ किया: मेरा लड़का कैसे होगा जब किसी मर्द ने मुझे छुआ नहीं, और मैं बे-हया नहीं रही? और जवाब: '**कज़ालिकि क़ाल रब्बुकि हुव 'अलय्य हय्यिन** — यूँ तेरे रब ने कहा: ये मेरे लिए आसान है — **व लि-नज्'अलहू आयतल्-लिन्-नासि व रहमतम्-मिन्ना** — **और हम उसे लोगों के लिए एक निशानी और अपनी तरफ़ से एक रहमत बनाएँगे** — **व काना अम्रम्-मक़्ज़िय्या** — और ये एक तय-शुदा मामला है।'

और फिर, बेटा, विलादत — और ये क़ुरआन के सब से इंसानी हिस्सों में से एक है:

'फ़-अजा-अहल्-मख़ाज़ु इला जिज़्'इन्-नख़्लह — और ज़चगी के दर्द उसे खजूर के दरख़्त के तने तक ले आए — क़ालत या लैतनी मित्तु क़ब्ल हाज़ा व कुन्तु नस्यम्-मन्सिय्या — उसने कहा: काश मैं इस से पहले मर जाती और पूरी तरह भुला दी गई होती।'

बेटा, यहाँ रुकिए। एक नबी की माँ, जहानों की औरतों पर चुनी गई, अकेली, दर्द-ए-ज़ेह में, एक तने से लिपटती — और वो कहती है: **काश मैं मर जाती।**

और अल्लाह ने उसके अल्फ़ाज़ अपनी किताब में **बिना डाँट के** दर्ज किए।

बेटा, समझिए इसका मतलब क्या है। **इस्लाम आपसे ये दिखावा नहीं माँगता कि दर्द तकलीफ़ नहीं देता।** ये तकलीफ़ के बीच मुस्कुराहट का मुतालबा नहीं करता। तारीख़ की सब से मो'अज़्ज़ज़ औरत ने कहा 'काश मैं मरी होती और भुला दी गई होती', और अल्लाह ने उसे महफ़ूज़ किया — और फिर उन्होंने उसे नर्मी से जवाब दिया, लेक्चर से नहीं।

'फ़-नादाहा मिन तह्तिहा अल्ला तह्ज़नी — तो उसने उसे उस के नीचे से पुकारा: ग़म मत कर — क़द ज'अल रब्बुकि तह्तकि सरिय्या — तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर (चश्मा) बना दिया।'

'व हुज़्ज़ी इलैकि बि-जिज़्'इन्-नख़्लति तुसाक़ित 'अलैकि रुतबन जनिय्या — और खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिला; वो तुझपर ताज़ा पकी खजूरें गिराएगा।'

बेटा, अब इसे ग़ौर से देखिए, क्योंकि यहाँ एक सबक़ है जो हर मुश्किल का सामना करने का अंदाज़ बदल सकता है।

अल्लाह खजूरें ख़ुद ब ख़ुद गिरा सकते थे। वो एक औरत थी ज़चगी के आख़िरी लम्हात में — जिस्मानी तौर पर एक शख़्स जितना कमज़ोर हो सकता है। और फिर भी हुक्म है: **दरख़्त हिलाओ।**

और बेटा, जो भी खजूर के दरख़्त जानता है वो जानता है कि एक सेहत-मंद जवान मर्द तक एक पुख़्ता खजूर के तने से खजूरें नहीं हिला सकता। तो हिलाना कभी खजूरें न गिराने वाला था। **अल्लाह ने उन्हें गिराया। मगर उन्होंने पहले कोशिश**

माँगी।

यही उसूल है, बेटा: **अल्लाह की मदद आम तौर पर एक अमल के ज़रिए आती है, उस की जगह नहीं।** तुम्हें अपना दरख़्त हिलाना होगा — एप्लीकेशन भेजो, फ़ोन करो, दवा लो, मवाद पढ़ो, गुफ़्तगू करो। **खजूरें उसकी हैं। हिलाना तुम्हारा।**

और ग़ौर कीजिए उसने उसे क्या रिज़्क़ दिया: खजूरें और पानी। उसके पाँव के पास एक चश्मा और ताज़ा खजूरें गिरती हुईं — और उलमा ने देर से ग़ौर किया है कि दोनों एक ऐसी औरत के लिए कितने मुनासिब हैं जिसने अभी बच्चे को जन्म दिया हो।

'**फ़-कुली वश्रबी व क़र्रीं 'ऐना** — **तो खा और पी और राज़ी हो जा** — अपनी आँख ठंडी कर।'

बेटा, एक परेशान औरत को तीन हिदायात, और उन में से हर एक नर्म और जिस्मानी है: **कुछ खाओ, कुछ पियो, और अपना दिल ठहराओ।** अल्लाह ग़म के साथ यूँ पेश आते हैं।

वो बच्चा जो बोला

'**फ़-अतत बिही क़ौमहा तह्मिलुह** — फिर वो उसे अपनी क़ौम के पास ले आई, **उसे उठाए हुए।**'

बेटा, उसे कहा गया था कि वो किसी से कुछ न कहे — '**इन्नी नज़र्तु लिर्-रहमानि सौमन फ़-लन उकल्लिमल्-यौम इन्सिय्या**' — मैंने अर्-रहमान के लिए एक रोज़े की मन्नत मानी है, तो मैं आज किसी इंसान से बात न करूँगी।

और वो बच्चे को उठाए अपने शहर में चल पड़ी। बेटा, उस चाल में हिम्मत का तसव्वुर कीजिए। **वो छुप सकती थी। उसने उसे खुले-आम उठाया और अल्लाह को अपना दिफ़ा' करने दिया।**

'**क़ालू या मरयमु लक़द जिअ्ति शै-अन फ़रिय्या** — उन्होंने कहा: **ऐ मरयम, तूने एक बे-मिसाल (बुरी) चीज़ की है** — **या उख़्त हारून मा काना अबूकिम्-रअ सौ-**

इंव्-व मा कानत उम्मुकि बग़िय्या — ऐ हारून की बहन, तेरा बाप बुरा आदमी न था, न तेरी माँ बे-हया थी।'

बेटा, इल्ज़ाम की सब से ज़ालिम शक्ल: **उसके माँ-बाप की इज़्ज़त को घसीटना।**

'**फ़-अशारत इलैह — तो उसने उस की तरफ़ इशारा कर दिया।**'

बेटा, उसने कुछ न कहा। उसने अपनी मन्नत क़ायम रखी, और बस बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया। वो भड़क उठे: '**कैफ़ नुकल्लिमु मन काना फ़िल्-महि्द सबिय्या — हम उस से कैसे बात करें जो गोद में एक बच्चा है?**'

और फिर, बेटा, वो नन्हा बच्चा बोला — और सुनिए उस ने क्या **तरतीब** से कहा, क्योंकि हर लफ़्ज़ उसकी माँ का दिफ़ा' है और ख़ुद की ता'रीफ़:

'**क़ाल इन्नी 'अब्दुल्-लाह — उसने कहा: बेशक, मैं अल्लाह का बंदा हूँ।**'

बेटा, उसके मुँह से निकले बिल्कुल **पहले** अल्फ़ाज़: मैं अल्लाह का **बंदा** हूँ। बेटा नहीं। ख़ुदा नहीं। एक बंदा। **चौदह सदियों की इलाहियाती बहस का जवाब उस पहले जुमले से जो उसने कभी कहा।**

'**आतानियल्-किताब व ज'अलनी नबिय्या** — उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया — **व ज'अलनी मुबारकन ऐन मा कुन्तु — और उसने मुझे मुबारक (बा-बरकत) बनाया जहाँ भी मैं हूँ — व औसानी बिस्-सलाति वज़्-ज़कात ़मा दुम्तु हय्या — और मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक मैं ज़िंदा रहूँ — व बर्रम्-बि-वालिदती — और (मुझे) अपनी माँ का फ़रमाँबरदार (बनाया) — व लम यज्'अल्नी जब्बारन शक़िय्या** — और उसने मुझे एक बद-बख़्त सरकश नहीं बनाया।'

बेटा, 'मुबारकन ऐन मा कुन्तु' देखिए — बा-बरकत **जहाँ भी मैं हूँ**। किसी ख़ास जगह या किसी ख़ास ओहदे में बा-बरकत नहीं — **जहाँ भी रखा जाए बा-बरकत।** और कुछ सलफ़ ने एक शख़्स में 'बरकह' की तशरीह यूँ की कि वो जहाँ भी जाए दूसरों को फ़ायदा पहुँचाए।

बेटा, ये अल्लाह से माँगने लायक़ चीज़ है: **मुझे फ़ायदे का सरचश्मा बना जहाँ भी तू**

मुझे रखे।

और फिर वही जोड़ा ग़ौर कीजिए जो इस सूरह में बार बार आता है: **नमाज़, और एक वालिद से हुस्न-ए-सुलूक।** यह्या अपने माँ-बाप का फ़रमाँबरदार था; 'ईसा अपनी माँ का फ़रमाँबरदार बनाया गया; और आप इसे एक बार और इब्राहीम के साथ देखेंगे।

'**ज़ालिक 'ईसब्नु मरयम क़ौलल्-हक़्क़िल्-लज़ी फ़ीहि यम्तरून — ये है 'ईसा, मरयम का बेटा — हक़ की बात जिस में वो इख़्तिलाफ़ करते हैं।**'

'**मा काना लिल्लाहि अंय्यत्तख़िज़ मिंव्-वलदिन सुब्हानह — अल्लाह के शायान-ए-शान नहीं कि वो कोई बेटा बनाए; वो पाक है — इज़ा क़ज़ा अम्रन फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन फ़-यकून** — जब वो कोई काम फ़ैसला करता है तो बस उसे कहता है: **हो जा** — और वो हो जाता है।'

और सूरह में आगे, बेटा, उस दावे का रद्द एक ऐसी शिद्दत से किया जाता है जो कहीं और नहीं मिलती: '**तकादुस्-समावातु यतफ़त्तर्न मिन्हु व तन्शक़्क़ुल्-अर्ज़ु व तख़िर्रुल्-जिबालु हद्दा — आसमान क़रीब हैं कि उस से फट पड़ें, और ज़मीन चिर जाए, और पहाड़ ढह कर गिर पड़ें — अन द'औ लिर्-रहमानि वलदा — कि वो अर्-रहमान के लिए एक बेटा ठहराते हैं।**'

बेटा, तख़्लीक़ ख़ुद सिहर उठती है। और फिर तसहीह, नर्मी से और मुकम्मल तौर पर: '**इन कुल्लु मन फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़ि इल्ला आतिर्-रहमानि 'अब्दा — आसमानों और ज़मीन में कोई नहीं मगर वो अर्-रहमान के पास एक बंदे के तौर पर आता है।**'

ऐ मेरे प्यारे अब्बा

और फिर, बेटा, सूरह इब्राहीम (अलैहि0) की तरफ़ मुड़ती है — और ये हिस्सा इस बात का उस्तादाना नमूना है कि एक ऐसे वालिद से कैसे बात की जाए जिस से आप इत्तेफ़ाक़ नहीं रखते।

उसका बाप बुत-तराश था। और पढ़िए उसने उसे कैसे मुख़ातिब किया — चार बार,

और हर बार ठीक उसी लफ़्ज़ के साथ:

'**या अबति लिमा तअ्बुदु मा ला यस्म'उ व ला युब्सिरु व ला युग़्नी 'अन्क शै-आ** — **ऐ मेरे प्यारे अब्बा**, आप उस चीज़ को क्यों पूजते हैं जो न सुनती है न देखती है और न आपको कोई फ़ायदा देगी?'

'**या अबति इन्नी क़द जा-अनी मिनल्-'इल्मि मा लम यअ्तिक** — **ऐ मेरे प्यारे अब्बा, बेशक मेरे पास वो इल्म आया है जो आपके पास नहीं आया** — **फ़त्तबिअ्नी अह्दिक सिरातन सविय्या** — तो मेरी पैरवी कीजिए; मैं आपको सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाऊँगा।'

बेटा, उस नाज़ुकी को देखिए। उसे अपने बाप को — एक बूढ़े आदमी, अपने घर के एक साहिब-ए-इख़्तियार — बताना था कि वो कुछ जानता है जो उसका बाप नहीं जानता। और उसने ये बिना ज़र्रा भर हक़ारत के किया: **इल्म 'मेरे पास आया है', एक तोहफ़े के तौर पर, अपनी बरतरी की कोई कामयाबी के तौर पर नहीं।**

'**या अबति ला तअ्बुदिश्-शैतान** — **ऐ मेरे प्यारे अब्बा**, शैतान की इबादत मत कीजिए — **इन्नश्-शैतान काना लिर्-रहमानि 'असिय्या** — बेशक शैतान अर्-रहमान का ना-फ़रमान रहा है।'

'**या अबति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यमस्सक 'अज़ाबुम्-मिनर्-रहमानि फ़-तकून लिश्-शैतानि वलिय्या** — **ऐ मेरे प्यारे अब्बा, मुझे डर है कि अर्-रहमान की तरफ़ से एक अज़ाब आपको छू ले।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: उसकी दलील कभी 'आप ग़लत हैं और मैं सही' नहीं है। ये है '**मुझे आपकी फ़िक्र है**'। वो बहस नहीं जीत रहा; वो एक ऐसे शख़्स को बचाने की कोशिश कर रहा है जिसे वो प्यार करता है।

और बाप का जवाब: '**क़ाल अ राग़िबुन अन्त 'अन आलिहती या इब्राहीम** — क्या तू मेरे ख़ुदाओं से **मुँह मोड़ रहा है**, ऐ इब्राहीम? **ल-इल्-लम् तन्तहि ल-अर्जुमन्नक** — **अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे ज़रूर संगसार करूँगा** — **वह्जुर्नी मलिय्या** — **और एक लंबे अर्से के लिए मुझ से दूर हो जा।**'

बेटा, संगसार की धमकी दी गई, और अपने ही घर से निकाला गया, अपने ही बाप के हाथों।

और इब्राहीम का जवाब सब से हैरत-अंगेज़ हिस्सा है: '**क़ाल सलामुन 'अलैक** — **उसने कहा: आप पर सलाम हो** — **स-अस्तग़्फ़िरु लक रब्बी** — **मैं अपने रब से आपके लिए माफ़ी माँगूँगा** — **इन्नहू काना बी हफ़िय्या** — बेशक, वो मेरे साथ हमेशा **मेहरबान** रहा है।'

बेटा, उसके बाप ने उसे संगसार करने की धमकी दी, और उसने जवाब दिया: **आप पर सलाम हो, और मैं आपके लिए दुआ करूँगा।**

ये एक वालिद के साथ हुस्न-ए-सुलूक की इंतेहा है। बेटा, आपके माँ-बाप के चाहे जो ऐब हों, और उन के साथ एक गुफ़्तगू चाहे जितनी मुश्किल हो जाए, ये वो मेयार है जो आपको दिया गया: **'या अबति', और 'सलामुन 'अलैक'।**

'**व अअ्तज़िलुकुम व मा तद्'ऊन मिन दूनिल्-लाहि व अद्'ऊ रब्बी** — और मैं आपको और उस को छोड़ देता हूँ जिसे आप अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, और मैं अपने रब को पुकारूँगा — '**असा अल्ला अकून बि-दु'आ-इ रब्बी शक़िय्या** — **शायद मैं अपने रब से अपनी दुआ में महरूम न होऊँ।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए — ये वही जुमला है जो ज़करिया ने सूरह की शुरू में इस्तेमाल किया। **इब्राहीम अपना घर और ख़ानदान इस उम्मीद के सिवा कुछ ले कर नहीं छोड़ता कि उसकी दुआ बे-जवाब न जाएगी।** और अल्लाह ने उसे इस्हाक़ और याक़ूब दिए, और नुबुव्वत को उसकी नस्ल में वक़्त के इख़्तिताम तक जारी किया।

और इस्माईल (अलैहि0) के बारे में: '**इन्नहू काना सादिक़ल्-व'अ्दि व काना रसूलन नबिय्या** — बेशक, वो **अपने वादे का सच्चा** था, और एक रसूल और नबी था — **व काना यअ्मुरु अह्लहू बिस्-सलाति वज़्-ज़कातिव काना 'इन्द रब्बिही मर्ज़िय्या** — **और वो अपने घरवालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था, और वो अपने रब के नज़दीक पसंदीदा था।**'

बेटा, उस के बारे में जो कुछ कहा जा सकता था उस में से दो चीज़ें चुनी गईं: **उसने अपने वादे पूरे किए, और उसने अपने घरवालों को नमाज़ पढ़वाई।** ये वो दो चीज़ें हैं

जो अल्लाह ने उसकी विरासत के तौर पर चुनीं। पूछिए क्या ये आपकी विरासत के तौर पर चुनी जाएँगी।

वो रोते हुए सजदे में गिर पड़े

और फिर, बेटा, अंबिया की इस लंबी क़तार के बाद, अल्लाह बयान करते हैं कि उन में क्या मुश्तरक था:

'उलाइकल्-लज़ीन अन्'अमल्-लाहु 'अलैहिम मिनन्-नबिय्यीन — ये वो थे जिन पर अल्लाह ने अंबिया में से फ़ज़्ल किया — इज़ा तुत्ला 'अलैहिम आयातुर्-रहमानि ख़र्रू सुज्जदंव्-व बुकिय्या — जब उन पर अर्-रहमान की आयतें पढ़ी जातीं, वो सजदे में गिर पड़ते, रोते हुए।'

बेटा, सब से अज़ीम इंसान जो कभी जीए क़ुरआन को यूँ क़ुबूल करते थे: वो **गिर** पड़े — 'ख़र्रू', ढह पड़े — सजदा करते और आँसुओं में।

और फिर मुक़ाबला: **'फ़-ख़लफ़ मिम्-ब'अ्दिहिम ख़ल्फ़ुन अज़ा'उस्-सलात वत्तब'उश्-शहवात — मगर उनके बाद ऐसे जानशीन आए जिन्होंने नमाज़ ज़ाया की और ख़्वाहिशों की पैरवी की — फ़-सौफ़ यल्क़ौन ग़य्या — तो वो बुराई से मिलेंगे।'**

बेटा, दो अलामात ग़ौर कीजिए जो नाम की गईं: 'अज़ा'उस्-सलाह' — उन्होंने नमाज़ **खोई**, ज़ाया की, नज़र-अंदाज़ की; और 'इत्तब'उश्-शहवात' — उन्होंने अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की। और उलमा ने ग़ौर किया कि **दोनों हमेशा साथ चलते हैं: जब नमाज़ खोई जाए, ख़्वाहिश ख़ाली कुर्सी ले लेती है।**

और ग़ौर कीजिए कि 'अज़ा'उस्-सलाह' का मतलब ज़रूरी नहीं कि उन्होंने नमाज़ छोड़ दी। उस में इसे देर से पढ़ना, बे-परवाही से पढ़ना, उसे उसके वक़्त से निकल जाने देना भी शामिल है। बेटा, ये एक तंबीह है जो उन लोगों पर निशाना है जो अभी भी ख़ुद को दीनदार समझते हैं।

'इल्ला मन ताब व आमन व 'अमिल सालिहन फ़-उलाइक यद्ख़ुलूनल्-जन्नत व ला युज़्लमून शै-आ — सिवाए उन के जो तौबह करें, ईमान लाएँ और नेक अमल

करें — वो जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर ज़र्रा भर ज़ुल्म न होगा।'

बेटा, **इस किताब में दरवाज़ा कभी बंद नहीं।** एक शख़्स चाहे जितना दूर बह गया हो, तंबीह के बाद वाली आयत हमेशा वापसी का रास्ता है।

अर्-रहमान उनके लिए मोहब्बत रख देगा

फिर सूरह जन्नत को '**जन्नाति 'अद्निन**' — हमेशगी के बाग़ — के तौर पर बयान करती है — जहाँ '**ला यस्म'ऊन फ़ीहा लग़्वन इल्ला सलामा** — वो उस में कोई फ़ुज़ूल बात न सुनेंगे, सिर्फ़ **सलाम** — **व लहुम रिज़्क़ुहुम फ़ीहा बुक्रतंव्-व 'अशिय्या** — और उनके लिए उस में उनका रिज़्क़ होगा, सुब्ह और शाम।'

और ये अस्ली कामयाबी की अज़ीम ता'रीफ़ों में से एक देती है: '**तिल्कल्-जन्नतुल्-लती नूरिसु मिन 'इबादिना मन काना तक़िय्या** — ये वो जन्नत है जिसे हम अपने उन बंदों की विरासत बनाते हैं जो **परहेज़गार** थे।'

सूरह दौलतमंदों के झूठे यक़ीन के बारे में भी ख़बरदार करती है — वो आदमी जिसने कहा 'मुझे ज़रूर (आख़िरत में) माल और औलाद दिए जाएँगे' — और जवाब देती है: '**अ इत्तल'अल्-ग़ैब अमित्-तख़ज़ 'इन्दर्-रहमानि 'अह्दा** — क्या उसने ग़ैब में झाँका, या उसने अर्-रहमान से कोई **अह्द** ले रखा है?'

बेटा, और फिर एक आयत जिसे हम में से हर उस शख़्स को हिला देना चाहिए जो फ़र्ज़ करता है कि उसका दुनियावी आराम ये मतलब रखता है कि अल्लाह उस से राज़ी हैं: '**व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्तीना फ़र्दा** — और वो जिसका वो ज़िक्र करता है उस का हम **वारिस** हो जाएँगे, **और वो हमारे पास अकेला आएगा।**'

बेटा, 'यअ्तीना फ़र्दा' — वो हमारे पास **अकेला** आएगा। जो कुछ उसने जमा किया पीछे रह जाता है। हर शख़्स जिसपर वो टिकता था पीछे रह जाता है।

'**व इम्-मिन्कुम इल्ला वारिदुहा** — **और तुम में से कोई नहीं मगर वो उस (जहन्नम) पर से गुज़रेगा** — **काना 'अला रब्बिक हत्मम्-मक़्ज़िय्या** — ये तुम्हारे रब पर एक तय-शुदा लाज़मी बात है — **सुम्म नुनज्जिल्-लज़ीनत्-तक़ौ व नज़रुज़्-ज़ालिमीन फ़ीहा जिसिय्या** — **फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो अल्लाह से डरते थे**, और

ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल छोड़ देंगे।'

बेटा, हर एक शख़्स उस के पास से गुज़रेगा। उलमा ने इस गुज़रने की अस्ल शक्ल में इख़्तिलाफ़ किया, और सब से मक़्बूल राय ये है कि ये सिरात — आग के ऊपर का पुल — पार करने की तरफ़ इशारा करती है। उसकी ठीक शक्ल जो भी हो, नुक़्ता वाज़ेह है: **कोई जन्नत तक उस जगह से गुज़रे बग़ैर नहीं पहुँचता। तो अल्लाह से महफ़ूज़ गुज़र माँगो।**

और अब, बेटा, वो आयत जिसे मैं आपके साथ छोड़ना चाहता हूँ — पूरे क़ुरआन के सब से ख़ूबसूरत वादों में से एक:

'इन्नल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति स-यज्'अलु लहुमुर्-रहमानु वुद्दा — बेशक, जो ईमान लाए और नेक अमल किए — अर्-रहमान उनके लिए मोहब्बत रख देगा।'

बेटा, '**वुद्द**' एक ख़ास क़िस्म की मोहब्बत है — गर्म-जोशी भरी, चाहत भरी, वो मोहब्बत जो लोगों को तुम्हारे क़रीब होने का दिल कराती है। और 'स-यज्'अलु' — वो इसे **रख** देगा, जमा कर देगा।

नबी ﷺ ने समझाया कि ये कैसे होता है: जब अल्लाह किसी बंदे से मोहब्बत करते हैं, वो जिब्रील को बुलाते और फ़रमाते हैं कि वो फ़लाँ से मोहब्बत करते हैं, तो उस से मोहब्बत कर। फिर जिब्रील उस से मोहब्बत करता और आसमानों के रहने वालों में एलान करता है कि अल्लाह इस शख़्स से मोहब्बत करते हैं, तो उस से मोहब्बत करो। और फिर उसके लिए ज़मीन पर मक़्बूलियत रख दी जाती है।

बेटा, अमली तौर पर इसका मतलब समझिए। **तुम्हें लोगों की चाहत के लिए मुहिम चलाने की ज़रूरत नहीं।** तुम्हें दिखावा करने, या सब को ख़ुश करने, या अपनी इमेज सँभालने की ज़रूरत नहीं। **अपना अल्लाह के साथ रिश्ता ठीक करो, और वो तुम्हारी साख़ सँभाल लेते हैं।**

और ग़ौर कीजिए कौनसा नाम फिर इस्तेमाल हुआ: **अर्-रहमान।** बेटा, गिनिए कि वो नाम इस सूरह में कितनी बार आया — ये हर कहानी में चलता है। ज़करिया की निजी पुकार, मरयम की पनाह, 'ईसा की बंदगी, इब्राहीम का अपने बाप के लिए डर,

अंबिया का सजदे में गिरना। और अब ये: **अर्-रहमान उन लोगों के दिलों में तुम्हारे लिए मोहब्बत रख रहा है जिनसे तुम कभी मिले ही नहीं।**

सूरह ख़त्म होती है: '**फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बि-लिसानिक लि-तुबश्शिर बिहिल्-मुत्तक़ीन व तुन्ज़िर बिही क़ौमल्-लुद्दा** — और हमने इसे सिर्फ़ तुम्हारी ज़ुबान पर आसान किया ताकि तुम परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी दो और एक झगड़ालू क़ौम को ख़बरदार करो — **व कम अह्लक्ना क़ब्लहुम मिन क़र्निंन हल तुहिस्सु मिन्हुम मिन अहदिन औ तस्म'उ लहुम रिक्ज़ा — और हमने उन से पहले कितनी नस्लें तबाह कीं? क्या तुम उन में से किसी को महसूस करते हो, या उनकी कोई भिनक सुनते हो?**'

बेटा, क्या आख़िरी लाइन है। पूरी क़ौमें जो कभी ज़मीन को शोर से भर देती थीं — और अब एक भी आवाज़ नहीं। 'रिक्ज़ा' का मतलब सब से हल्की मुमकिन भिनक है।

तो वो सूरह जो अंधेरे में एक बूढ़े आदमी की छुपी पुकार से खुली ये बताते हुए ख़त्म होती है कि सब से ऊँची आवाज़ वाली तहज़ीबें उस भिनक से भी कम निशान छोड़ गईं। **बेटा, ख़ामोश दुआ सुनी गई। सल्तनतें न सुनी गईं।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. सब से बेहतर दुआ वो है जिसे कोई नहीं जानता — 'निदा-अन ख़फ़िय्या'।

2. अपना मुक़दमा अपनी ख़ुद की तारीख़ से बनाओ: 'मैं तुझ से दुआ माँग कर कभी महरूम नहीं हुआ।'

3. इस्लाम तुमसे दर्द का दिखावा नहीं माँगता — मरयम के अल्फ़ाज़ बिना डाँट के दर्ज हुए, और खाने, पानी और तसल्ली से जवाब दिया गया।

4. दरख़्त हिलाओ: उसकी मदद आम तौर पर तुम्हारी कोशिश के ज़रिए आती है, उस की जगह नहीं।

5. 'ईसा के पहले अल्फ़ाज़ 'मैं अल्लाह का बंदा हूँ' थे — और माँगो कि तुम 'जहाँ भी

हो बा-बरकत' बनाए जाओ।

6. 'या अबति' चार बार, और एक ऐसे बाप को 'आप पर सलाम' जो संगसार करने की धमकी दे — ये हुस्न-ए-सुलूक की इंतेहा है।

7. जब नमाज़ खोई जाए, ख़्वाहिश ख़ाली कुर्सी ले लेती है — और जब तुम अल्लाह के साथ चीज़ें ठीक कर लो, वो लोगों के दिलों में तुम्हारे लिए मोहब्बत रख देते हैं।

या अल्लाह, हमें जहाँ भी हों बा-बरकत बना दीजिए, हमें अपनी दुआ में महरूम मत कीजिए, और हमें अपना वुद्द अता कीजिए। आमीन।